बिपिन पाण्डेय

ई-मेल:pandey.bipin67@gmail.com

संशय और समाधान

"अरे! पिता जी आप?" अनमोल ने अपने पिता जी को दरवाजे पर खड़ा देखकर कहा।

"क्यों, क्या हुआ? मुझे नहीं आना चाहिए था?"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है? मैंने कल रात में टूटते तारे को देखकर विश माँगी थी कि 'पापा जी मिलने आ जाएँ'; और आप आ गए। बचपन में 'टूटते तारे को देखकर विश करो तो पूरी हो जाती है' सुना था। आज तो सच होते हुए, देख लिया। आइए-आइए,अंदर आइए।"

"मैंने और तुम्हारी माँ ने तुमको कई बार फोन किया और बोला कि बेटा! थोड़ा समय निकालकर घर आ जाओ। तुम्हें देखे हुए कई महीने हो गए। तुम्हारे पास तो समय है नहीं, माँ-बाप से मिलने का।"

"क्या करूँ? पिता जी! काम ही इतना ज्यादा है कि समय नहीं मिलता।" मैं तो आप लोगों से बार-बार कहता हूँ कि आप और माँ यहीं आ जाओ, मेरे पास आकर रहो।"

"कैसे आ जाऊँ? बेटा ! गाँव का घर और खेत कौन देखेगा ?

"आप घर और खेत-खलिहान की चिंता छोड़िए। मुझे तो नौकरी ही करनी है। खेती-बाड़ी अपने बस की बात नहीं; और न मैं गाँव जाकर रह सकता हूँ। आप घर में ताला लगा दीजिए और खेत किसी को बटाई पर दे दीजिए।"

''बेटा, यहाँ पर हमारा मन भी नहीं लगेगा। गाँव में तुम्हारी माँ और मेरा, दोनों का मन लगा रहता है। मैं खेतों पर जाकर घूम आता हूँ और आते-जाते हुए गाँव के लोगों से बात भी कर लेता हूँ तो टाइम पास हो जाता है। तुम्हारी माँ से भी टोले-मुहल्ले की औरतें मिलने आ जाती हैं और काम में हाथ भी बँटा लेती हैं। यहाँ शहर में आकर हम किसके साथ बात करेंगे। तुम तो सुबह नौकरी पर चले जाओगे। हम लोग घर में अकेले ही रह जाएँगे। फिर मैं यह भी नहीं चाहता कि मेरे बेटे की बदनामी हो।"

''कैसी बदनामी पिताजी? ये आप कैसी बात कर रहे हैं?

"अरे, बेटा! लोग कहेंगे कि अनमोल के माँ-बाप को तो देखो, कैसे हैं? हर समय खाँसते- खखारते रहते हैं। बूढ़े हो गए हैं। बीमार रहते हैं। बेटे को परेशान करने गाँव से शहर चले आए।"

"ये कैसी बात कर रहे हैं आप। जब बेटा जवान हो जाता है तो बाप तो बूढ़ा होगा ही और बुढ़ापे में तो छोटी-मोटी बीमारी तो लगी रहती है, ये सबको पता है। जो ये बात नहीं समझते, वे पढ़े-लिखे मूर्ख हैं। आप उनकी चिंता छोड़िए।"

बेटे की बात सुनकर अनमोल के पिताजी की आँखें नम हो गईं। बोले, "ठीक है बेटा! अब मैं कल ही जाकर तुम्हारी माँ को ले आता हूँ।"

"नहीं, आप यहीं रुकिए पिताजी, कल मैं खुद जाकर माँ को साथ ले आऊँगा।"

बिपिन पाण्डेय

नाम और नंबर

"राह चलते हुए एक व्यक्ति को आवाज लगाकर भुवन जोशी जी ने कहा—‘‘बेटा, मुझे प्रकाश पंत जी के घर जाना है। पता बता दो।"

"कौन प्रकाश पंत, अंकल जी?"

"बेटा! प्रकाश मेरा बचपन का दोस्त है और यहीं नोयडा , सेक्टर 23 में रहता है। मैं उससे मिलने आया हूँ। दसों साल हो गए, तब से मिलना नहीं हुआ। साल-छह महीने में एक-आध बार बात हो जाती है।"

"अंकल जी! यह सब तो ठीक है लेकिन इस तरह तो आप अपने दोस्त के घर नहीं पहुँच पाएँगे।"

‘‘फिर क्या करना होगा अपने दोस्त से मिलने के लिए? बेटा, मैं तो 150 किमी दूर गाँव से उससे मिलने के लिए ही आया हूँ।"

"आपको उनका मकान नंबर बताना पड़ेगा, तभी आपकी कोई मदद हो सकती है।"

"हमारे गाँव में तो सभी एक-दूसरे को नाम से जानते हैं। अपने गाँव क्या, आस-पास के गाँव में भी यदि कोई किसी का नाम लेकर पूछता है तो भी लोग बता देते हैं।"

"आप सही कह रहे हैं, अंकल! पर यह गाँव नहीं है; शहर है। यहाँ किसी के घर पहुँचने के लिए मकान नंबर बताना बहुत जरूरी है। नहीं तो इधर-उधर घूमते रहेंगे, कोई मदद नहीं कर पाएगा।"

शहर में व्यक्ति की पहचान उसके नाम से नहीं, मकान नंबर से ही होती है।